Date ___/___/______ Page No.: ______

कॉंग्रेस का उग्रवादी युग एवं उसकी नीतियाँ-

बीसवी सदी के आरम्भ मे भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन मे एक नई विचारधारा का जन्म हुआ जो उदारवादी विचारधारा से पूर्णतया भिन्न थी। ब्रिटिश सरकार द्वारा उदारवादियों के प्रस्तावों एवं मॉंगों पर कोई ध्यान नही दिया गया। तथा 1885 से 1905 के बीच भारत और विदेशों में कुछ ऐसी घटनाये घटित हुए जिससे कॉंग्रेस एवं भारतीय समाज की युवा पीढ़ी में एक नया जोश उत्पन्न हुआ जो संवैधानिक साधनों के प्रति अविश्वास की भावना रखता था। उनका अंग्रेजो की न्यायप्रियता से विश्वास उठ गया था। अब वे यह अनुभव करने लगे थे कि स्वराज्य मॉंगने से नही बल्कि संघर्ष करने से प्राप्त होगा। संघर्ष द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्त करने के मार्ग को अपनाने वाली इस धारा को उग्रराष्ट्रीयता के नाम से जाना जाता है। इसके प्रतिपादक बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय, और विपिन चन्द्र पाल थे। जिन्हें बाल, लाल और पाल के नाम से जाना जाता है। इन नेताओं ने 1906 से 1919 ई० तक भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व किया। जिनका प्रमुख उद्देश्य स्वराज्य की प्राप्ति थी।

उग्रवादी युग के उदय के कारण —

20 वीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशक में उग्र राष्ट्रीयता का उदय हुआ, वह आकस्मिक न होकर विभिन्न घटनाओं और परिस्थितिओं का स्वाभाविक परिणाम था। अतः उग्रवादी युग के उदय के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं-

1. सुधारों की अपर्याप्तता -
2. आर्थिक असन्तोष -
3. धार्मिक-सांस्कृतिक पुनरुत्थान -
4. प्राकृतिक प्रकोप —
5. ब्रिटिश उपनिवेशों में भारतीयों के साथ दुर्व्यवहार -
6. अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव -
7. बाल, लाल पाल का नेतृत्व
8. लार्ड कर्जन का प्रतिक्रियावादी शासन -

प्राचार्य
मीरा मैमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर ..., बलिया